ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

200वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024 सदैव सत्य

वर्ष 46 | अंक 34 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 24 जुलाई, 2023 से रविवार 30 जुलाई, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124 |
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं एवं वैदिक विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने का अभियान

दिल्ली सभा द्वारा लेह लद्दाख के पुस्तक महोत्सव में वैदिक साहित्य का प्रचार

आर्य समाज का वैदिक साहित्य संपूर्ण मानवजाति के लिए सदैव उन्नति का अमृत सिद्ध हुआ है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की कालजई प्रमुख रचना सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कार विधि, व्यवहार भानु, सवमंत्वयामंतव्य प्रकाश, गो करुणानिधि, उपदेश मंजरी आदि अमर ग्रन्थों की प्रेरणा से करोड़ों लोगों को वैदिक सन्मार्ग की प्राप्ति हुई है। इस श्रृंखला

को आगे बढ़ाते हुए हमारे वैदिक विद्वानों तथा आर्य संन्यासियों ने राष्ट्र एवं मानव निर्माण हेतु हजारों पुस्तकों की रचनाएं की हैं, परिणाम स्वरूप संपूर्ण देश और दुनिया में वैदिक साहित्य के माध्यम से वेद, धर्म, संस्कृति और आर्य विचारधारा का प्रचार-प्रसार और विस्तार लगातार हो रहा है।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस पर दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 12 से 16 जुलाई 2023 तक लेह लद्दाख पुस्तक महोत्सव में वैदिक साहित्य का वृहद स्टाल सफलता पूर्वक लगाया गया। जिसमें वहां के राज्यपाल सहित सभी क्षेत्रीय गणमान्य और सामान्य जनों का निरंतर तांता लगा रहा।

एन.बी.टी. इंडिया द्वारा आयोजित इस पुस्तक महोत्सव का आयोजन मल्टीपरपज इनडोर स्टेडियम लद्दाख, जो की बर्फीली चोटियों के बीच, कंपकपाती हुई ठंड के विपरीत वातावरण में किया गया था, जहां पर अधिक ऊंचाई होने के कारण ऑक्सीजन की कमी का भी अनुभव किया जाता रहा है, ऐसे ठंडे और चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में पुस्तक महोत्सव का उद्घाटन वहां के माननीय उपराज्यपाल श्री वी.डी. मिश्रा जी के मुख्य आतिथ्य में किया गया। उन्होंने अपने उद्बोधन में ऋग्वेद को संसार का प्राचीनतम ग्रंथ बताते हुए कई प्रेरक मंत्रों की व्याख्या की और मानव मात्र को वेद पढ़ने का संदेश दिया। आदरणीय उपराज्यपाल ने महर्षि दयानंद सरस्वती की प्रमुख रचना सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास का वर्णन करते हुए 'माता वैरी पिता शत्रु' की तार्किक व्याख्या करते हुए बालक बालिकाओं के जीवन में शिक्षा को महत्वपूर्ण बताया। माननीय उपराज्यपाल महोदय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक साहित्य के स्टाल पर भी पधारे और उन्होंने वहां से सत्यार्थ प्रकाश

- शेष पृष्ठ 4 पर

आर्य समाज द्वारा बाढ़ पीड़ित स्वास्थ्य जांच शिविर संपन्न

दिल्ली सभा की स्वास्थ्य जागरूकता सेवा की टीम द्वारा मजनूं का टीला एवं सिग्नेचर ब्रिज पर बाढ़ पीड़ितों की स्वास्थ्य जांच

यह सर्वविदित ही है कि दिल्ली में मुसीबतों की बाढ़ लेकर आई यमुना की अथाह जलराशि तो अब कम हो गई है। लेकिन वे निर्धन लोग जो इस भयंकर बाढ़ की चपेट में आकर सबसे ज्यादा प्रभावित हुए, उनके घर परिवार, बच्चे, बुजुर्ग आर्थिक रूप से तो प्रभावित हुए ही हैं, लेकिन उनके स्वास्थ्य पर भी इसका गहरा असर पड़ा है। अभी भी यमुना खादर के इलाकों में मरे हुए पशुओं के कंकाल निकाले जा रहे हैं, सड़ा हुआ पानी और उमस भरा मौसम कई तरह से बीमारियों को आमंत्रण दे रहा है, बेघर हुए लोग इधर-उधर भटकने के लिए मजबूर हैं। बच्चे, बुजुर्ग और महिलाओं के सर के ऊपर बीमारियों का

ज्यादा खतरा मंडरा रहा है।

ऐसी स्थिति में फिर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने जहां एक तरफ बाढ़ के उस दौर में जब लोग खाने-पीने और पहनने-ओढ़ने के कपड़ों से मोहताज थे। तब पूरी शक्ति के साथ राहत बचाव कार्य लगातार किया, उस समय बाढ़ ग्रस्त प्रगति मैदान इलाके के लोग तो यहां तक कहने लगे थे कि हमें तो आर्य समाज ने गोद ले रखा है, हमारे खाने-पीने से लेकर ओढ़ने पहनने के वस्त्र सब आर्य समाज प्रदान कर रहा है। अब जबकि वहां पर लोगों को बाढ़ के प्रकोप से तो राहत मिली है लेकिन अभी भी वहां सेवा की अत्यंत आवश्यकता

- शेष पृष्ठ 4 पर

वेदवाणी-संस्कृत

देवमन द्वारा ज्ञान की स्थिरता

वेद-स्वाध्याय

पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह।
वसोष्पते नि रमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम्॥
-अथर्व० 1।1।2
ऋषिः- अथर्वा॥ देवता-वाचस्पतिः॥ छन्दः-अनुष्टुप्॥

शब्दार्थ- वाचःपते=हे वाणी व ज्ञान के पालक देव! तुम **पुनः**=फिर **एहि**=मुझमें आओ; **देवेन**=देव, द्योतमान **मनसा**=मन के, मननक्रिया के **सह**=साथ आओ। **वसोःपते**=हे वसु के पति! तुम **नि रमय**=मुझे (इस ज्ञान में) रमण कराओ, रस दिलाओ, आनन्दित कराओ; **मयि श्रुतम्**=मेरा सुना हुआ ज्ञान **मयि एव**=मुझमें ही **अस्तु**=रहे, ठहरे।

विनय- मैं जो कुछ सुनता हूँ वह मुझमें ठहरता नहीं। मानो मैं 'एक कान से सुनता हूँ और दूसरे से निकाल देता हूँ।' इस तरह मेरा मनोमय शरीर ऐसा रोग्रस्त हुआ पड़ा है कि मैं अच्छे-से-अच्छे सत्य उपदेश सुनकर और उत्तम-उत्तम वेदज्ञान पाकर भी उसे अपने में धारण नहीं कर सकता। इसका कारण यह है कि मेरे इस शरीर ने अपनी मनन-क्रिया को छोड़ दिया है। मनन करना, आत्मचिन्तन करना, एकान्त में आत्मनिरीक्षण व विचार करना त्याग दिया है। ऐसा करना मेरे स्वभाव में ही नहीं रहा है, अतः मेरा मन 'देव' नहीं रहा है, द्योतमान, प्रज्वलित और जीवनसम्पन्न नहीं रहा है और मेरा मनोमय शरीर मृतप्राय हो गया है, अतः हे वाचस्पते! हे वाणी व ज्ञान के पालक देव! हे मेरे मनोमय देह के प्राण! तुम फिर मुझमें आओ और अपने प्रवेश द्वारा मेरे इस मृत मन-शरीर को पुनर्जीवित कर दो। तुम देव-मन के साथ फिर मुझमें प्रविष्ट होओ और मुझमें मनन, चिन्तन और आत्मभावन व आत्मनिरीक्षण का अभ्यास फिर से जारी कर दो। अभी तक बेशक बिना भूख के खाये स्वादु-से-स्वादु भोजन की तरह मेरा सुना हुआ सुन्दर-से-सुन्दर वेद-ज्ञान मुझे नीरस और अरुचिकर लगता रहा है, परन्तु अब से तो मुझमें देव-मन के जगा देने द्वारा, हे वसोष्पते! तुम इस वेदज्ञान में मुझे नितरां रत कराओ, रमण कराओ। हे बसने वाली स्थिर वस्तु के पति! हे इस ज्ञान-ऐश्वर्य के रक्षक! तुम ऐसा करो कि शुष्क-से-शुष्क किन्तु सत्य और हित के उपदेश मुझे अब बड़े आनन्ददायी और सरस लगने लगें और अतएव मुझमें रक्षित और स्थिर रहने लगें। तुम मुझमें मनन-क्रिया को ऐसा जगा दो कि मेरा मन अब द्योतमान हो जाए; इसमें मानसिक अग्नि जल उठे, ज्ञान की भूख लगने लगे, जिज्ञासाएँ उत्पन्न होने लगें। तब तो भूख में खाये रूखे-सूखे भोजन की भाँति भी शुष्क-से-शुष्क दीखने वाले उच्च ज्ञान में भी मेरा मन निःसन्देह रमने लगेगा और बड़ा आनन्दरस पाने लगेगा। तब तो मैं जो कुछ सुनूँगा वह अवश्य मुझमें ठहरेगा, हजम होकर मेरे मनोमय शरीर का अंग हो जाया करेगा और इस प्रकार मैं प्रतिदिन नया-नया ज्ञान ग्रहण करता हुआ मानसिक रूप में समुन्नत, वृद्धिंगत और विकसित होता जाऊँगा।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

महिलाओं का अपमान, देश का अपमान

मानवता को शर्मसार करने वाले दरिंदों पर शीघ्र और सख्त हो कार्यवाही

"महिलाओं के अपमान पर राजनीतिक दलों की बातों पर ध्यान न देते हुए महिलाओं के प्रति सम्मान की बात पर ही केन्द्रित रहना चाहेंगे। क्योंकि आज की राजनीति तो ऐसी दलदली जमीन बन चुकी है जहां पैर रखते ही आदमी जितना उससे बाहर निकलने का प्रयास करता है उतना ही गहरे दलदल में धंसता जाता है। राजनीति में मानवीय मूल्यों की अनदेखी, सिद्धांतों की उपेक्षा, परंपराओं का पतन एक साधारण सी बात हो गई है। छल, कपट, स्वार्थ और धोखाधड़ी की मिसाल लगातार बनाई जा रही हैं। इसलिए महिलाओं का अपमान चाहे मणिपुर में हो अथवा बंगाल में, राजस्थान में हो या छत्तीसगढ़ या फिर झारखंड में, चाहे देश के किसी भी कोने में हो वह सदा अक्षम्य ही था, है और सदा रहेगा। आर्य समाज का यह स्पष्ट मानना है कि महिला चाहे किसी भी वर्ग, आयु, क्षेत्र की क्यों न हो, वह हर रूप में पूजनीय है। अगर इस तरह से महिलाओं के साथ बर्बरता पूर्ण दुर्व्यवहार के घिनौने घटनाक्रम सामने आएंगे तो देश का सिर शर्म से झुकना ही है। आर्य समाज अपने देश के मस्तक को कभी झुकता हुआ देखना नहीं चाहता।"

वैदिक कालीन युग में महिलाओं को पूरा सम्मान प्राप्त था। उस समय मातृशक्ति को देवी, सहधर्मिणी, अर्द्धांगिनी, गृहणी माना जाता था। स्मृतिकाल में भी **''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता''** के अनुसार सर्वमान्य था कि जहां पर नारी का सम्मान होता है वहीं देवता निवास करते हैं। इसके उपरांत नारी को शक्ति स्वरूपा, नारायणी, लक्ष्मी आदि की संज्ञा भी दी जाती रही। किन्तु 11वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी के बीच भारत में महिलाओं की स्थिति दयनीय होती गई। इस काल खंड में महिलाओं को शिक्षा, सम्मान, उन्नति, प्रगति, विकास और सशक्तिकरण की मुख्यधारा से वंचित किया जाने लगा। मुगल शासन, सामन्ती व्यवस्था, केन्द्रीय सत्ता का विनष्ट होना, विदेशी आक्रमण और शासकों की विलासितापूर्ण प्रवृत्ति ने महिलाओं को उपभोग की वस्तु बना दिया और जिसके कारण सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, विधवाओं के विवाह पर प्रतिबंध, अशिक्षा आदि विभिन्न सामाजिक कुरीतियों का समाज में प्रवेश हुआ, इस समय की अवधि को अंधकार का युग भी कहना अनुचित नहीं होगा। क्योंकि इस कालखंड में महिलाओं की सामाजिक स्थिति को इतना हीन बना दिया था कि नारी स्वयं अपने वास्तविक स्वरूप से अंजान होने लगी थी।

19वीं सदी में ही अज्ञान, अविद्या, ढोंग, पाखंड, अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियों के अंधकार को तिरोहित करने वाले, वेद ज्ञान की ज्योति से समूचे मानव समाज को कल्याण की राह दिखाने वाले, प्रेम और करुणा की प्रतिमूर्ति महर्षि दयानंद सरस्वती जी का जन्म 12 फरवरी सन् 1824 को गुजरात प्रांत के टंकारा में हुआ। उन्होंने विश्व गुरु भारत की गरिमा को पुनर्जीवित करते हुए नारी जाति के उत्थान और सम्मान की रक्षा हेतु नयी शिक्षा की क्रांति को जन्म दिया, सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा पर रोक लगाई, विधवाओं के विवाह प्रारंभ कराए, मनुष्य को मनुष्य बनने का संदेश दिया, देश की स्वाधीनता के आंदोलन में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले लाखों अमर शहीदों को प्रेरणा प्रदान की। महर्षि दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना करके यह सुनिश्चित कर दिया कि भारत सहित विश्व की नारी के शिक्षा और सम्मान की रक्षा को सदैव सुरक्षित किया जाता रहे। महर्षि की प्रेरणा को शिरोधार्य करते हुए आर्य समाज हमेशा नारी के उत्थान और सम्मान के लिए कार्य करता रहा है।

आज 21वीं सदी में जब 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसे गगन भेदी उद्घोष गुंजायमान हो रहे हैं, भारत के गौरव को बढ़ाने में महिलाएं पुरुष वर्ग के साथ कदम से कदम मिलाकर लगातार कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं, भारत राष्ट्र के निर्माण में हर क्षेत्र में नारी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। लेकिन फिर भी कुछ निकृष्ट लोग नारी का अपमान, तिरस्कार, उत्पीडन करने से बाज नहीं आ रहे। नारी जाति की अस्मिता के ऊपर लगातार कुठाराघात किया जा रहा है, जगह-जगह बलात्कार और सामूहिक बलात्कार किए जा रहे हैं। महिलाओं के टुकड़े कर-करके मारा जा रहा है। फ्रिज में उनके शरीरों को रखा जा रहा है, जंगलों में फेंका जा रहा है। जो कि अपने आप में पूरी मानवता के लिए एक बड़े कलंक की बात है। इसके लिए आर्य समाज मांग करता है कि चाहे केंद्र सरकार हो या राज्य सरकार सबको मिलकर ऐसी कठोर कार्यवाही करनी चाहिए जो महिलाओं के साथ बर्बरता पूर्ण उत्पीडन का दुर्व्यवहार करने वाले मानवता के शत्रु हैवान और शैतान दरिंदों की रुह कांप जाए।

विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का दंभ भरने वाले भारत में अगस्त 2022 में राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एन.सी.आर.बी.) ने भारत में 2021 में महिला अपराध मामलों में एक रिपोर्ट जारी की थी। उसमें सिर्फ रेप के 31,677 मामले दर्ज होने का आंकड़ा है। ये आंकड़े दर्ज किए गए मामलों के हैं, किंतु इस बीच न जाने कितने मामले ऐसे भी होते हैं जो समझौतों या धन के प्रभाव और ताकत के दबाव के सामने दबा दिये जाते हैं, जो समाज के सामने ही नहीं आते। वर्ष 2020 में दर्ज बलात्कार के मामलों की संख्या 28,046 थी, जबकि 2019 में यह 32,033 थी। अर्थात 2019 की तुलना में 2020 में रेप के मामले कम दर्ज किए गए, लेकिन 2021 में फिर से दर्ज मामलों की संख्या बढ़ी। यह भी बात सामने आती रहती है कि ज्यादातर रेप मामलों में पीड़िता का कोई जानने वाला ही शामिल होता है। इन शर्मशार करने वाले आंकड़ों को अगर राज्यों के हिसाब से देखें तो एन.सी.आर.बी. की रेप केस वाली रिपोर्ट में राजस्थान (6337), मध्य प्रदेश (2947), महाराष्ट्र (2496) और उत्तर प्रदेश (2845) जैसे राज्य शीर्ष पर थे, जबकि दिल्ली में 2021 में 1250 बलात्कार के मामले दर्ज किए गए थे। जनसंख्या के आधार पर देखें तो रेप मामले में अपराध की दर (प्रति लाख जनसंख्या) राजस्थान (16.4) में उच्चतम थी। इसके बाद चंडीगढ़ (13.3), दिल्ली (12.9), हरियाणा

- शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

अमृत की तलाश

राजमार्ग का उद्देश्य निश्चित है, दूसरी ओर जाना अंधेरे में कूदने के समान है। विश्वासी जीव कहते हैं कि दूसरी ओर की चोटियों पर अमरलोक है, परन्तु वह किसी ने देखा नहीं। उद्देश्य संदिग्ध मार्ग विकट! क्या इससे अधिक विषम समस्या भी हो सकती है? परन्तु मूलशंकर जी को इस विषम दशा में अधिक भटकना नहीं पड़ा। उन्होंने इस प्रकार विचार किया, एक ओर राजमार्ग है, वह मृत्यु का रास्ता है। यह निश्चित है। वह मार्ग नीचे की ओर जाता है, यह भी निश्चित है। इस कारण वह हेय है। दूसरी ओर अमरता की सम्भावना है। नाश के निश्चय से बचाव की सम्भावना बहुत अच्छी है। यह सोचकर मूलशंकर जी ने निश्चित मृत्यु की ओर ले जाने वाले राजमार्ग का एकदम त्याग कर दिया और सम्भावित अमरपद की तलाश के लिए कमर कस ली।

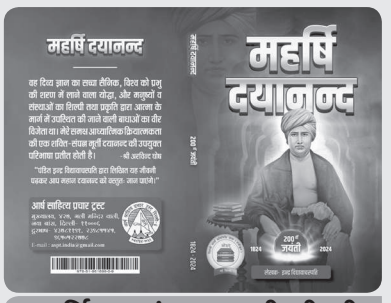

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर प्रकाशित

प्रकाशक- आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, सहप्रकाशक- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, पुस्तक प्राप्ति के लिए vedicprakashan.com ऑनलाइन प्राप्त करें अथवा 9540040339 पर संपर्क करें।

क्रमशः गतांक से आगे

मूलशंकर जी के जीवन में यह समय विषम परीक्षा का था। वे एक पहाड़ की ऐसी चोटी पर खड़े थे जिसके एक ओर नीचे उतरने की शाही सड़क बनी हुई थी, और दूसरी ओर जिस चोटी पर वे खड़े थे उससे भी अधिक ऊंची चोटियां दिखाई दे रही थीं। बीहड़ जंगल था, कंटीली पगडंडियां थीं और नुकीले पत्थर थे। शाही सड़क पर होकर नीचे उतर आना बहुत सुगम था, परन्तु दूसरी ओर जाना जान को खतरे में डालना था। सरल मार्ग मृत्यु-लोक को जाता है, उस पर अनगिनत प्राणी बड़ी सरलता से चले जा रहे हैं। दुर्गम मार्ग कहां का है? क्या वह अमर लोक का मार्ग है?- कह नहीं सकते। कई लोग उस मार्ग पर चलना आरम्भ करके ऐसी उलझनों में फंसे कि न इधर के ही रहे, न उधर के ही हुए। बहुत-से लोग बीहड़ जंगल में कुछ कदम चलकर यह कहते हुए लौट आए कि बस, जाने दो, यह सब ढोंग है। राजमार्ग का उद्देश्य निश्चित है, दूसरी ओर जाना अंधेरे में कूदने के समान है। विश्वासी जीव कहते हैं कि दूसरी ओर की चोटियों पर अमरलोक है, परन्तु वह किसी ने देखा नहीं। उद्देश्य संदिग्ध मार्ग विकट! क्या इससे अधिक विषम समस्या भी हो सकती है?

परन्तु मूलशंकर जी को इस विषम दशा में अधिक भटकना नहीं पड़ा। उन्होंने इस प्रकार विचार किया, एक ओर राजमार्ग है, वह मृत्यु का रास्ता है। यह निश्चित है। वह मार्ग नीचे की ओर जाता है, यह भी निश्चित है। इस कारण वह हेय है। दूसरी ओर अमरता की सम्भावना है। नाश के निश्चय से बचाव की सम्भावना बहुत अच्छी है। यह सोचकर मूलशंकर जी ने निश्चित मृत्यु की ओर ले जानेवाले राजमार्ग का एकदम त्याग कर दिया और सम्भावित अमरपद की तलाश के लिए कमर कस ली। विवाह का झंझट देखकर उन्होंने समझ लिया कि इस संसार का तिलिस्मी द्वार खुल गया है। यह तिलिस्मी द्वार हरेक युवा और युवती को अपनी ओर बड़े वेग से खींचता है। जहां द्वार के अन्दर पांव धरा कि पीछे के किवाड़ स्वयं बन्द हो जाते हैं। पीछे लौटने के लिए सीधा रास्ता बिल्कुल बन्द हो जाता है। मूलशंकर जी ने देखा कि द्वार खुल गया उसमें एक पग रखने की देर है। द्वार बन्द होते ही अमरलोक एक हल्का-सा सपना रह जाएगा-पैर जंजीरों में बंध जाएंगे।

अमृत के प्यासे मूलशंकर जी ने प्रेममय घर और सरल राजमार्ग को लात मारकर 21 वर्ष की आयु में बीहड़ वन का रास्ता पकड़ा। वे ज्येष्ठ मास की एक सांझ को घर त्यागकर निकल गए।

-क्रमशः अगले अंक में...

स्वास्थ्य संदेश

नाक के रोग : पुराना नजला-जुकाम, साइनसाइटिस, नकसीर

नाक रोगों में नजला-जुकाम, साइनस की सूजन या पीव आना, नकसीर (nose bleed, epistaxis) तथा फीवर आदि प्रमुख रोग हैं।

नजला-जुकाम अर्थात् नाक से रेशा बहने के कारण सर्दी लगना, सर्दी के साथ बुखार आना, नाक में संक्रमण होना है। ऐसी स्थिति में नाक में प्राय: सूजन आ जाती है। नाक में बहुत दिनों तक संक्रमण रहने से भी नाक बहता रहता है। सिर में चोट लग जाने के कारण भी कुछ लोगों के नाक में रेशा जाना शुरू हो जाता है।

नासिका गुहा के समीप खाली स्थान तथा खोपड़ी में खाली स्थानों जिनका संबंध नाक के भीतरी भाग से रहता है, में सूजन आ जाने को साइनुसाइटिस कहते हैं। जब ये संक्रामक हो जाते हैं तो माथे तथा ऊपरी जबड़े और मुख में दर्द शुरू हो जाता है, नाक से तरल पदार्थ बहना शुरू हो जाता है और मुंह से दुर्गंध आने लगती है। खोपड़ी में तथा नासिका गुहा के पास कई साइनस हैं। जिनको विभिन्न नाम दिए गए हैं।

जन्म के समय कुछ बच्चों में 'साइन्स' या तो बिल्कुल नहीं होते या फिर बहुत छोटे आकार के होते हैं। छ:-सात वर्ष की आयु में जब हड्डियों का तेजी के साथ विकास शुरू होता है तो 'साइन्स' की भी काफी वृद्धि लेने लगती है। 'साइनस' के बारे में महत्वपूर्ण बात यह है कि बहुत से 'साइनस' को रक्त की सप्लाई मस्तिष्क से होती है और इनका रक्त वाहिनियों द्वारा खोपड़ी से

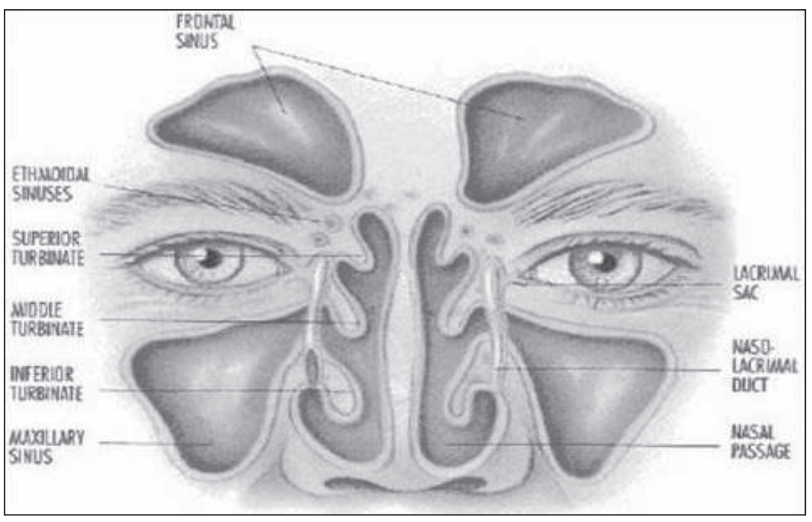

बाहर दूसरे कई अंगों से सम्पर्क रहता है।

नाक की ऍलर्जी अर्थात नजला, जुकाम, छींके आना तथा रेशा बहना, इसके बारे में कहा जाता है कि यह रोग कीटाणुओं से होता है जो श्वासोच्छवास मार्ग के ऊपरी भाग (upper respiratory) में हमेशा मौजूद रहते हैं। जब शरीर स्वस्थ रहता है। तो ये कीटाणु कमजोर रहते हैं। परन्तु जैसे ही ठंड आदि लगने के कारण शरीर की शक्ति कमजोर हो जाती है या जिन व्यक्तियों के शरीर की प्रतिरोध शक्ति (resistance power) कम होने लगती है तो उनमें ये सशक्त हो जाते हैं।

नजला-जुकाम के कई लक्षण हैं जैसे सर्दी के साथ शरीर में कंपन शुरू होना, छींके आना, नाक और आंखें लाल हो जाना, सिर में दर्द और सिर का भारी प्रतीत होना, नाक से रेशा बहना, आंखों से पानी निकल आना, गले का दर्द और अधिक प्यास लगना। इसके अतिरिक्त बाजुओं, गर्दन तथा पीठ में भी दर्द होने लगता है और हलका हलका बुखार भी होने लगता है। सूंघने और स्वाद की शक्ति कमजोर होने लगती है। जैसे-जैसे रोग पुराना होता जाता है वैसे-वैसे सिर, नाक और गले के अतिरिक्त छाती के भी कई रोग हो जाते हैं। जैसे श्वास-नाली का प्रदाह (acute bronchitis), दमा (asthma) तथा फेफड़ों में सूजन (pneumonia) इत्यादि।

तेज साइनस (acute sinusitis) की अवस्था में ऊपर के जबड़ों के दांतों में दर्द होने लगता है। कई बार गलती से इस दर्द को दांतों का मूल दर्द मानकर दांत निकाल दिए जाते हैं। साइनस के कारण आंखों में भी दर्द हो जाता है और आंखों के आसपास सूजन आ जाती है। आलस्य और सुस्ती के अतिरिक्त कई बार उल्टियां भी लग जाती हैं।

तथापि अभी तक जुकाम-नजला होने का कोई ठोस कारण पता नहीं चल सकता है और न ही इसका कोई पक्का इलाज मिल सका है। पुराने साइनसाइटिस (chronic sinusitis) में जो दवाइयां भी दी जाती हैं उनका असर भी थोड़े समय के लिए रहता है और कुछ दिनों बाद रोग फिर वैसे का वैसा हो जाता है।

साइनस (sinuses) सिर की हड्डियों के बीच के रिक्त स्थान हैं जो वायु से भरे रहते हैं। सारे साइनस नाक की ऊपरी गुहा में (all them open into the nasal cavities) खुलते हैं। इसलिए इनका ठंड से ग्रस्त हो जाना स्वाभाविक है। साइनस के दो महत्वपूर्ण कार्य हैं:

1. ये आवाज को प्रतिध्वनि (resonance to the voice) देते हैं। जिन लोगों को काफी समय से साइनसाइटिस की तकलीफ हो उनकी आवाज स्पष्ट न होकर कुछ विकृत या बदलकर निकलती है।
2. साइनस का दूसरा प्रमुख कार्य यह है कि गर्दन पर सिर की हड्डियों का बोझ प्रतीत नहीं होने देते और खोपड़ी के बोझ को सामान्य रखते हैं। अगर ऐसा न हो तो हमेशा सिर डांवाडोल रहे, कभी एक तरफ गिर कभी दूसरी तरफ। जब साइनस में वायु की जगह तरल पदार्थ या पीव (fluid or pus) ले लेते हैं तो सिर भारी रहने लगता है।

शरीर विज्ञान के अनुसार प्रकृति शरीर के उन सभी डेड और घिस गए

- शेष पृष्ठ 6 पर

पृष्ठ 1 का शेष

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा महर्षि दयानंद की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने का अभियान

अंग्रेजी, धनुर्वेद, आर्योद्देश्य रत्नमाला, वेदों को जाने आदि पुस्तकें प्राप्त की। इसके साथ ही लेह लद्दाख क्षेत्र के प्रमुख लेखक, प्रोफेसर गयाल, अभिनेता लद्दाखी भी उपस्थित हुए। इस अवसर पर एन.बी.टी. के डायरेक्टर कर्नल युवराज मलिक का भी आर्य समाज के स्टाल पर आगमन हुआ।

पुस्तक महोत्सव के दूसरे दिन एडिशनल जर्नल आफ पुलिस लेह

यह पुस्तक महोत्सव अपने आप में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार के लिए अत्यंत सफल सिद्ध हुआ। क्योंकि मैदानी इलाकों में नगरों और महानगरों में पुस्तक मेले में स्टॉल लगाना जितना सरल है, वहीं लेह लद्दाख के ऊंचे स्थानों पर जाकर वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का प्रचार-प्रसार करना अपने आप में एक चुनौती थी। लेकिन सच्ची लगन से ही व्यक्ति गगन

लद्दाख पुस्तक महोत्सव में उपराज्यपाल माननीय श्री बी.डी. मिश्रा एवं अन्य महानुभावों का स्वागत एवं स्टाल का उद्घाटन करते हुए डॉ. मुकेश आर्य एवं श्री रवि प्रकाश जी

लद्दाख, श्री स्वर्ण सिंह, डिप्टी सेक्रेटरी, इलेक्शन कमिशन श्री यतींद्र मावलंकर जी, आई.ए.एस. चीफ इलेक्शन अधिकारी श्री रवि जी, डी.आई.जी. आई.टी.बी.पी., कर्नल डॉ. किरण जी, भारतीय सेना आदि महानुभावों ने अपनी इच्छा के अनुसार वैदिक साहित्य प्राप्त कर आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की प्रबल भावना की प्रशंसा की और इसके अलावा हर आयु वर्ग के पाठकों ने सत्यार्थ प्रकाश और अनेक अनेक अन्य वैदिक साहित्य की प्रेरणाप्रद पुस्तकों को प्राप्त करके गौरव का अनुभव किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के स्टाल का उद्घाटन डॉ. मुकेश आर्य, मंत्री, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली ने अपने करकमलों से किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि वर्तमान समय की चुनौतियों का सामना आर्ष ग्रंथों के पठन-पाठन से ही संभव है। आपने पुस्तक महोत्सव में भागीदारी के लिए सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी की प्रेरणा व आर्थिक सहयोग का वर्णन करते हुए कृतज्ञता और आभार व्यक्त किया। महामंत्री श्री विनय आर्य जी की दूरदर्शिता और सकारात्मक विचारों को इसका हेतु बताया। पुस्तक मेला समितियों के अध्यक्ष श्री सतीश चड्डा जी के प्रति भी आभार व्यक्त किया। श्री सुखबीर सिंह आर्य, मंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मार्गदर्शन को भी प्रशंसनीय बताया। वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार के प्रति समर्पित सभा के कार्यकर्ता श्री रवि प्रकाश जी की सेवाओं की भी सराहना की और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के इस अभियान को निरंतर आगे बढ़ाने का संकल्प प्रस्तुत किया।

यह पुस्तक महोत्सव अपने आप में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार के लिए अत्यंत सफल सिद्ध हुआ। क्योंकि मैदानी इलाकों में नगरों और महानगरों में पुस्तक मेले में स्टॉल लगाना जितना सरल है, वहीं लेह लद्दाख के ऊंचे स्थानों पर जाकर वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का प्रचार-प्रसार करना अपने आप में एक चुनौती थी। लेकिन सच्ची लगन से ही व्यक्ति गगन तक पहुंचता है। इसी लोकोक्ति को चरितार्थ करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने कहीं न कहीं लेह लद्दाख की चोटियों पर भी ओम का ध्वज फहराया और महर्षि दयानंद की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया। वैदिक साहित्य के स्टाल पर पधारने वाले सभी महानुभावों ने महर्षि के प्रति तथा आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की भावना और कामना की सराहना की। और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी आभार व्यक्त किया।

वेद मंत्र कंठस्थ करने के अभियान का शुभारंभ

बंधुओं, जैसा कि सर्वविदित ही है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के तीसरे नियम के अनुसार ''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है'' ऋषि जी ने आर्यजनों को वेद को पढ़ने-पढ़ाने की आज्ञा दी है। अत: महर्षि की 200वीं जयंती पर उनके आदेश को शिरोधार्य करते हुए सभा ने यह निर्णय लिया है कि प्रत्येक आर्य परिवार 50 वेद मंत्र अवश्य कंठस्थ करे। इसके लिए सभा द्वारा इच्छुक आर्य परिवारों को 50-50 मंत्र आवंटित कर दिए जाएंगे। मंत्रों के शुद्ध उच्चारण हेतु आडियो-विडियो आदि भी दिए जाएंगे। वेद मंत्रों को कंठस्थ करने वाले सभी महानुभावों को आगामी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में विशेष वेदपाठ का अवसर दिया जाएगा। अत: वेद मंत्रों को कंठस्थ करने के अभियान में सम्मिलित हों और महर्षि की आज्ञा का पालन करें। इससे परमधर्म का पालन भी होगा और वेदों की रक्षा भी होगी।

वेद मंत्र कंठस्थ करने के अभियान में भाग लेने के लिए आर्य परिवार श्रीमती सुरेखा चोपड़ा जी (9810936570), श्रीमती सीमा जी (9871136348) सामवेद प्रमुख, डॉ. संध्या जी (9811740690) यजुर्वेद प्रमुख, श्रीमती रेखा गुप्ता जी (9810685096) अथर्ववेद प्रमुख, श्री वीरेन्द्र सरदाना जी से (9911140756) पर संपर्क करें, Whatsapp द्वारा अपना नाम, पता और मोबाइल नम्बर भेजें या नीचे दिए गए लिंक पर लॉगइन कर फार्म सबमिट करें- https://forms.gle/Nt63pSRpYSiN6xBT7

आर्य समाज द्वारा बाढ़ पीड़ितों के स्वास्थ्य जांच शिविर संपन्न

पृष्ठ 1 का शेष

है। वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए सभा द्वारा संचालित स्वास्थ्य जागरूकता अभियान योजना के अंतर्गत 22 जुलाई 2023 को मजनूं का टीला, सिगनेचर ब्रिज और अनेक अन्य स्थानों पर स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें लोगों के बी.पी., शुगर और अनेक अन्य बीमारियों की जांच की गई। साथ ही आर्य समाज डी ब्लॉक, विकास पुरी के सहयोग से नि:शुल्क दवाइयां भी वितरित की गई। स्वास्थ्य जागरूकता अभियान के अंतर्गत सभा द्वारा पूरी दिल्ली की सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य जांच शिविरों के आयोजन लगातार चलते हैं। इसमें सभा की स्वास्थ्य जांच की पूरी टीम जगह-जगह जाकर दिहाड़ी मजदूर लोगों के स्वास्थ्य की जांच करते हैं और उन्हें अच्छे डॉक्टर से चिकित्सा के लिए प्रेरित करते हैं। इसके पीछे सभा की भावना यही है कि सब स्वस्थ हों, निरोग हों और सभी लोग अपने-अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए सुख शांति से जीवन व्यतीत करें।

आर्य समाज रजोकरी का 9वां वार्षिकोत्सव संपन्न

आर्य समाज रजोकरी द्वारा 9वां वार्षिकोत्सव 9 जुलाई 2023 को शिव मंदिर रजोकरी में हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य धनंजय शास्त्री जी, गुरु विरजानंद संस्कृतकुलम के ब्रह्मत्व में वहां के ब्रह्मचारियों द्वारा यज्ञ में वेद पाठ किया गया और सभी अधिकारी, कार्यकर्ताओं ने आहुति दी। आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश चड्डा जी ने ध्वजारोहण किया और आर्य समाज को

बधाई दी। इस अवसर पर सुखबीर सिंह आर्य, मंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और रजोकरी ग्राम तथा क्षेत्रीय प्रतिष्ठित महानुभाव और सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे। संयोजक डॉ. मुकेश आर्य जी ने आर्य समाज द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों और विशेष गतिविधियों की सबको जानकारी दी। विशेष प्रवचन और भजनों का कार्यक्रम भी सारगर्भित रहा। आर्य समाज के प्रधान श्री राजेश्वर आर्य जी ने सभी विद्वानों, अधिकारियों, कार्यकर्ताओं और सहयोगियों एवं शिव मंदिर के अधिकारियों का आभार व्यक्त किया।

-मंत्री, डॉ. दिलीप दिनकर

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती कविताओं की रचना करें और पुरुस्कार पाएं

ज्ञान रूपी गंगा के उदगम-हिमालय के समान थे दयानंद- कवि अखिलेश मिश्र

(5)

अबल-अनास्त्रित-ढाल, म्लेच्छ-कानन-दावानल।
गो-विधवा-प्रतिपाल, ग्यान-सुरसरित-हिमाचल।।
जय जन-मानस-व्योम-सोम नित ओम-प्रचारक।
तारक पतित-समाज, जयति सावित्री-धारक।।
प्रिय जन्मभूमि-जननी-सुवन, दुवन-दीह-खल-दल सकल।
जय सम्प्रदाय-गज-बन्धहित, दयानन्द अन्दुक-प्रबल।।

शब्दार्थ- अबल-कमजोर। कानन-जंगल। सुरसरित-गंगा जी। मानस-मन। व्योम-आकाश। सोम-चन्द्रमा। पतित-पापी अधम। सावित्री-गायत्री। दुवन-शत्रु। गज-हाथी। अन्दुक-जंजीर

भावार्थ- हे महर्षि दयानन्द जी! आप निबल और निराश्रितों की रक्षार्थ ढाल के समान तथा म्लेच्छ रूपी बन के जलाने के लिए दावाग्नि हो। आप गो, विधवाओं के पालक, ज्ञान रूपी गंगा के उद्गम, हिमालय पर्वत हैं। आप भक्तों के मनरूपी आकाश में चन्द्रमा की तरह विचरण करने वाले, ओ३म् नाम के प्रचारक, नीच समाज का निस्तार करने वाले और गायत्री मंत्र के धारण करने वाले हो, आपकी जय हो। आप जननी जन्मभूमि के प्रिय पुत्र एवम् सम्पूर्ण दुष्टदल के बड़े शत्रु हो तथा सम्प्रदाय रूपी हाथी के बांधने के लिए दृढ़ जंजीर हो। आपकी जय हो।

(6)

जयति मदन-मद-मथन, मन्द-मति-तम-बिनासकर।
कदन-कुतर्क-कुचाल, सदन-स्त्री, बदन भासकर।।
जयति वेद-पथ-पथिक, अहिंसा-मन्त्र-अलापी।
सत्य-सेतु-दढ दिव्य-ज्योति-घन कुसल कलापी।।
जय भक्तन हित सुख-सुम-सुरभि, बितरनमन्जुलमोच्छरु।
पुरुषार्थ-पाथ पोषित जयति, दयानन्द कलि-कल्पतरु।।

शब्दार्थ- मदन-कामदेव। मद-अहंकार। मन्दमति-अज्ञान कदन-नाश करने वाले। कुतर्क-वितण्डा। कुचाल-दुष्टात। सदन-घर। स्त्री-शोभा। बदन-मुख। भासकर-सूर्य। कुसल-चतुर। कलापी-मोर। सुरभि-सुगन्ध। सुम-फूल। पाथ-जल।

भावार्थ- कामदेव के अहंकार को तोड़ने वाले, अज्ञान रूपी अन्धेरे का नाश करने वाले आपकी जाय हो। आप बुरे तर्क और दुष्टता को नष्ट करने वाले, शोभा के भवन और सूर्य के समान मुख वाले हैं। आपकी जय हो। आप वेदमार्ग के पथिक एवम् अहिंसा मन्त्र के उच्चारण करने वाले हो और सत्य के सुदृढ़ पुल, दिव्य-ज्योति परमात्मा रूपी बादल के हेतु चतुर मोर हो। आप भक्तों को सुख रूपी फूल की सुगन्ध, एवम् मोक्ष रूपी फल के बांटने वाले हो। पुरुषार्थ रूपी जल से पोषित कलियुग के कल्पतरु दयानन्द महर्षि की जय हो।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के अवसर पर आर्य संदेश के सभी आयु वर्ग के पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद जी के जीवन पर विभिन्न घटना क्रमों पर आधारित कविता की रचना करके संपादक, आर्य संदेश, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली 110001, पर भेजें अथवा Email- aryasandeshdelhi@gmail.com करें। आपकी स्तरीय कविता को आर्य संदेश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा और विशेष अवसर पर आपको पुरुस्कृत भी किया जाएगा।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में

दिल्ली में 4 महीनों से चल रही वेद प्रचार रथ यात्रा संपन्न

पिछले दिनों वेद प्रचार रथ यात्रा द्वारा बाहरी रिंग रोड, वाल्मीकि मन्दिर, शंकर गार्डेन विकास पुरी, अशोका बिन्दुसार कैम्प, मलाई मन्दिर कैम्प, नवजीवन कैम्प,नेहरू कैम्प, दयाल सिंह कैम्प, परशुराम पार्क, सौरभ विहार, जे.जे. कालोनी, दयानन्द विहार, वाल्मीकि बस्ती, जागृती विहार, अशोका निकेतन, आर्य समाज प्रीत विहार, श्रीराम सेना हिन्दू कैम्प, मौनी बाबा मन्दिर ब्रह्मपुरी, आर्य बाल आश्रय गुरुकुल ब्रह्मपुरी आदि स्थानों पर हर आयु वर्ग के लोगों ने आर्य समाज के द्वारा आयोजित भजन, प्रवचन और यज्ञ में भाग लेकर स्वयं को गौरवान्वित और लाभान्वित अनुभव किया।

यज्ञ, भजन, प्रवचनों में हर आयु वर्ग के लोगों में दिखी उत्साह की लहर (समापन समाचार अगले अंक में)

आर्य समाज के वैदिक सिद्धांतों, मान्यताओं और परम्पराओं के प्रचार-प्रसार, युवा पीढ़ी को नशामुक्त करने, परिवार, समाज और देश की रक्षा हेतु रिश्तों को बचाने, भेद-भाव मिटाने के, पर्यावरण को बचाने, महिला सशक्तिकरण एवं महर्षि की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने का अभियान उत्साह पूर्वक चलाया गया।

In Search of Amrit

Continuing the last issue

Then he tried to become a Sanyasi (saint) by requesting different saints for that. But they hesitated to fulfill his wish taking care of his young age. One day he reached the bank of the Narmda river and requested Purna Nand Saraswati for adopting him as a Sanyasi. In the beginning Purna Nand ji hesitated, but after wards some other sanyasis recommended to accept his request. So, Shudh Chetan Swami was given the training of becoming a Sanaysi. Then finally he was accepted as a Sanyasi and named 'Dayanand Saraswati'.

After leaving home, Swami Daya Nand continued his journey in Gujrat. After that he visited so many different places at the bank of Narmada river after crossing Baroda and Chetan Muth. After that he stayed at Aabu for some days and reached Haridwar for Kumbh in Samvat 1912. He tried to understand the Maya (wrong deeds) of Mahantas and Muthas. Then he set out for the Himalays. He proved to be a true person searching for real Yogi on very difficult hills and tunnels crossing so many valleys.

Swami Daya Nand came across so many real and fraud yogis. He started hating fraud yogis and he learnt a lot from real yogis. While staying at channel Kalyanni he happened to meet Yogi Yoga Nand. He learnt so many Yogic activities (actions) under his guidance. He had a chance to learn yogic actioins from other two yogis at Ahmedabad. In this way Swami Daya Nand utilised his time completely for learning yoga.

On the way from Haridwar to Tihri State Swamiji got chance to observe and study books related to 'Tantra Vidya'. He was so much irritated and started hating these books and 'Tantra' too much. This state of mind could not be changed even after listening to so many new explanations about 'Tantra'. With complete dedication for learning 'Yoga' he started from Tihri and travelled by Kedar ghat, Rudra Prayag and Sidha Ashram etc. and experienced bad condition of Temples and Muthas very closely. He started climbing the hills of Tungnath expecting better condition and position of the temples and 'Muthas' but he was disapointed to observe the similar condition of the temples in 'Gupta Kashi'. He reached 'Okhi Muth' visiting 'Gupta Kashi' which is a prominent 'Mutha' of the Himalaya. He tried to search real saints in caves with the smokes of tobacco and 'Charas'

One of the 'Mahantas' present there offered him to be declared his 'Chief Chela' and his descendant. It was very difficult for him to get such an educated and decent chela. He also informed him that there was a great amount of money in the Mutha. Daya Nand replied, "If I had wish for money and high position like Muthadheesh' I would not have left my Father's property and money which was more valuable than the property of the 'Mutha'," Even then Daya Nand again said, "I left my home and property for some great and holy purpose. You even donot have any knowledge about that. How can I decide to live with you?" The Mahant asked, "What is that holy thing for which you are struggling so hard?" Daya Nand replied, "I am in search of true Yog Vidya and Moksha (salvation). I will work very hard to serve people of my country until I am successful in my search.

The Mahant of the Mutha had great property, a lot of money and luxury, but he did not have truth, and did not know Yoga or way to Moksha (Salvation). So he could not make Daya Nand agree to stop there and accept his offer. From there he left for Badri Narayan crossing Hoshi Mutha on the way. He had heard that there were many Yogis near Badri Narayan. But could not get any satisfactory solution from them. So he decided to visit nearby hills and caves. There was heavy snow fall all around. Water falling through pointed stones created great hurdles. But Daya Nand continued his search without bothering about the hurdles, He reached near bank of Alak Nanda river and decided to cross the river.

To be continued in next issue

हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
10 एवं 20 किलो
की पैकिंग में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद
क्रियमाण-संचित-प्रारब्ध-अनादि पदार्थ-प्रवाह से अनादि पदार्थ

49-51 क्रियमाण, संचित, प्रारब्ध

वर्तमान में जो किया
जाता है 'क्रियमाण' ।
'संचित' तत्कृत कर्म का
संस्कार ही जान ।।66।।
पूर्व किए निज कर्म का
सुख-दुख फल उपलब्ध ।
तीन भेद यों कर्म के
कहें इसे 'प्रारब्ध' ।।67।।

52-अनादि पदार्थ

ईश, जीव, संसार का
करण बिना विवाद ।
ये स्वरूप से जानिए
तीनों तत्व 'अनादि' ।।68।।

53-प्रवाह से अनादि पदार्थ

जीव कर्म, यह कार्यभव,
जो संयोग-वियोग ।
इस अनादि के त्रित्व में है
'प्रवाह' का योग ।।69।।

साभार :
सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

पृष्ठ 3 का शेष

नाक के रोग : पुराना नजला-जुकाम, साइनसाइटिस, नकसीर

सैलों को बाहर निकाल कर उनका स्थान नए सैलों को देती रहती है। इस तरह शरीर में विषैला पदार्थ इकट्ठा न होकर बाहर निकलता रहता है। सिर आदि से विषैला पदार्थ जो कि काफी सूक्ष्म होता है, साइनस के द्वारा नाक और गले से बाहर आता रहता है। इसके अतिरिक्त मृत सैल और विषैला पदार्थ त्वचा के मार्ग से पसीने द्वारा बाहर निकलते रहते हैं। अगर यह विषैला पदार्थ त्वचा और गले आदि के मार्ग से बाहर न निकले तो वहां एकत्र होकर और भी दु:खदायी बन जाता है। जैसा कि साइनस के बहुत से रोगियों में देखने को मिलता है। इसके विपरीत अगर विषैला पदार्थ साइनस की प्रक्रिया द्वारा नाक के मार्ग से लगातार बहना शुरू जो जाए तो भी इसे रोग समझना चाहिए क्योंकि सिर के विभिन्न अंगों की किसी भी प्रक्रिया में कोई नुक्स हो सकता है। जिसके कारण अनियमित रूप से ऐसा पदार्थ निकलता रहता है।

नाक के रोगों के लिए एक्यूप्रेशर प्वाइंट

नजला-जुकाम, साइनुसाइटिस (head colds, common cold and sinusitis) आदि के रोगियों को एक्युप्रेशर पद्धति द्वारा बहुत जल्दी आराम मिलता है। वर्षों के रोग केवल कुछ दिनों में ही दूर हो जाते हैं। अधिकतर साइनस क्योंकि सिर में स्थित हैं और इनकी स्थिति भी बड़ी सूक्ष्म है, उसी अनुसार इनसे बहने वाला तरल पदार्थ भी बड़ा सूक्ष्म होता है। इसी तरह पैरों तथा हाथों में साइनस से संबंधित प्रतिबिम्ब प्वाइंट भी बड़े सूक्ष्म स्थानों पर होते हैं। दोनों पैरों तथा दोनों हाथों की सारी अंगुलियों के अग्रभागों में ये प्वाइंट होते हैं। इनकी स्थिति तथा इन पर प्रेशर देने का ढंग चित्र सं. 107 में दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त पैरों तथा हाथों के अंगूठों तथा अंगुलियों के ऊपरी भाग पर भी अंगूठे के साथ (चित्र सं. 108) में प्रेशर देना चाहिए क्योंकि ये भाग भी साइनस से संबंधित हैं।

प्रेरक प्रसंग

रैफरी ने आऊट कर दिया

उत्तरप्रदेश के प्रसिद्ध आर्यसमाजी वक्ता पण्डित श्री धर्मपालजी शास्त्री ने एक बार सुनाया कि जब 1955 ई. में श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज बम्बई में रुग्ण थे तो उनके देहत्याग से पूर्व एक आर्यविद्वान् श्री महाराज के स्वास्थ्य का पता करने गये। स्वामीजी से स्वास्थ्य के विषय में पूछा तो आपने कहा, छोड़िए इस बात को, सब ठीक ही है। आप अपने सामाजिक समाचार सुनाएँ। यह कहकर स्वामीजी ने चर्चा का विषय पलट दिया।

उस विद्वान् माहानुभाव ने पुन: एक बार स्वामीजी के स्वास्थ्य की चर्चा चला दी तो स्वामीजी ने बड़ी गम्भीरता से, परन्तु अपने सहज स्वभाव से कहा, ''स्वास्थ्य की कोई बात नहीं, खिलाड़ी के रूप में खेल के मैदान में उतरे थे। खेलते रहे, खूब खेले। अब तो रैफरी ने आऊट कर दिया।''

मुनि के इस वाक्य को सुनकर उस विद्वान् ने कहा, ''स्वामीजी आप तो कभी आऊट नहीं हुए। अब भी ठीक हो जाएँगे।''

स्वामीजी महाराज ने कहा, ''परन्तु अब तो आऊट हो गये। रैफरी की व्यवस्था मिल गई है।''

मुनियों, गुणियों के जप-तप की सफलता की कसौटी की यही वेला होती है। वेदवेत्ता, आजन्म ब्रह्मचारी, योगी, स्वतन्त्रानन्द का वाक्य, ''खिलाड़ी के रूप में खेल के मैदान में उतरे थे, खेलते रहे, खूब खेले। अब तो रैफरी ने आऊट कर दिया'', मनन करने योग्य है। कौन साधक होगा जिसे यतिराज की इस सिद्धि पर अभिमान न होगा। यह हम सबके लिए स्पर्धा का विषय है। ऋषिवर दयानन्द के अमर वाक्य, ''प्रभु! तेरी इच्छा पूर्ण हो, पूर्ण हो, पूर्ण हो'', का रूपान्तर ही तो है। आचार्य के आदर्श को शिष्य ने जीवन में खूब उतारा।

-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

पृष्ठ 2 का शेष

(12.3) और अरुणाचल प्रदेश (11.1) का नंबर है।

उपरोक्त आंकड़े बता रहे हैं कि केवल भौतिक उन्नति से मानव समाज में सुख शांति का वैभव नहीं बढ़ता बल्कि मानवीय मूल्यों का संरक्षण और संवर्धन अत्यंत आवश्यक है। भारत राष्ट्र की उन्नति, प्रगति, यश कीर्ति के लिए समाज में महिलाओं का सम्मान और सुरक्षा बेहद जरूरी है। 19 जुलाई 2023 को जब मणिपुर की दुर्दांत घटना का वीडियो सामने आया जिसमें वहां पिछले 3 महीनों में हिंसा के दौरान लगभग 80 दिन पहले दो महिलाओं को सरेआम हजारों लोगों की भीड़ के सामने नग्न करके बेइज्जत किया गया, उनके भाई और पिता की हत्या की गई, उन्हें सड़क पर जबरदस्ती घुमाया गया। जानकारी के अनुसार इस जघन्य कुकृत्य की रिपोर्ट वहां के क्षेत्रीय थाने में लिखवाई गई लेकिन हैवान लोगों पर किसी प्रकार की कोई कार्यवाही न होना इस बात की ओर संकेत है कि आज फिर मानवता दम तोड़ रही है, भारत की कानून व्यवस्था बद से बद्तर होती जा रही है। इस अत्यंत दुखद निंदनीय घटना को घटे जब 75 दिन बीत गए थे, संसद सत्र के आरंभ होने से पूर्व जब मानवता को शर्मशार करने वाला वीडियो सामने आया तब केंद्र और मणिपुर की राज्य सरकार की नींद खुली और प्रधानमंत्री मोदी ने आगे आकर कहा, "मणिपुर के वायरल वीडियो की घटना से मेरा हृदय पीड़ा से भरा हुआ है। घटना शर्मसार करने वाली है। पाप करने वाले कितने हैं, कौन हैं वो अपनी जगह है लेकिन इससे देश के 140 करोड़ लोगों की बेइज्जती हो रही है। मैं राज्यों से अपील करता हूं कि वह अपने यहां कानून व्यवस्था और मजबूत करें, दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा।" इस हैवानियत को अंजाम देने वाले 4 राक्षस पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए गए हैं लेकिन प्रश्न यह है कि अभी भी वे दरिंदे क्यों नहीं पकड़े गए जो इस वारदात में शामिल थे।

आज इस दिल दहलाने वाली घटना को लेकर राजनीति भी चरम सीमा पर है, विपक्ष संसद में लगातार हंगामा काट रहा है, जिससे सारा काम काज ठप्प है, वे प्रधानमंत्री के द्वारा मणिपुर पर बहस की शुरुआत चाहते हैं, जबकि सत्ता पक्ष इस पर बिना प्रधानमंत्री को बीच में लाए चर्चा के लिए तैयार है, इस रस्साकसी में भी देश का नुकसान ही नुकसान है।

हम यहां पर राजनीतिक दलों पर ध्यान न देते हुए महिलाओं के प्रति सम्मान की बात पर ही केन्द्रित रहना चाहेंगे। क्योंकि आज की राजनीति तो ऐसी दलदली जमीन बन चुकी है जहां पैर रखते ही आदमी जितना उससे बाहर निकलने का प्रयास करता है उतना ही गहरे दलदल में धंसता जाता है। राजनीति में मानवीय मूल्यों की अनदेखी, सिद्धांतों की उपेक्षा, परंपराओं का पतन एक साधारण सी बात हो गई है। छल, कपट, स्वार्थ और धोखाधड़ी की मिसाल लगातार बनाई जा रही हैं। इसलिए महिलाओं का अपमान चाहे मणिपुर में हो अथवा बंगाल में, राजस्थान में हो या छत्तीसगढ़ या फिर झारखंड में, चाहे देश के किसी भी कोने में हो वह सदा अक्षम्य ही था, है और सदा रहेगा। आर्य समाज का यह स्पष्ट मानना है कि महिला चाहे किसी भी वर्ग, आयु, क्षेत्र की क्यों न हो, वह हर रूप में पूजनीय है। अगर इस तरह से महिलाओं के साथ बर्बरता पूर्ण दुर्व्यवहार के घिनौने घटनाक्रम सामने आएंगे तो देश का सिर शर्म से झुकना ही है। आर्य समाज अपने देश के मस्तक को कभी झुकता हुआ देखना नहीं चाहता। इसलिए पिछले दिनों महिलाओं के घोर अपमान और उत्पीडन की आर्य समाज सख्त निंदा एवं भर्त्सना करता है। केंद्र और सभी राज्य सरकारों से यह मांग करता है कि सभी वहशी दरिंदों को कठोर से कठोर दण्ड देकर यह सुनिश्चित किया जाए कि आने वाले समय में कोई इस तरह की कुचेष्टा करने की सोच भी न सके।

-संपादक

महर्षि दयानन्द उवाच
परोपकारी एवं प्रेरक शिक्षाएं

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रमुख रचना सत्यार्थ प्रकाश से लेकर उनकी जीवनी, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कारविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्य रत्नमाला, सवमंतव्यामंतव्य प्रकाश, उपदेश मंजरी आदि अनेक ग्रंथों से चयनित परोपकारी और प्रेरक शिक्षाएं आर्य संदेश के नियत नियमित कॉलम में महर्षि दयानंद उवाच के नाम से प्रकाशित की जा रही हैं। सभी पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद सरस्वती की इन जनकल्याण कारी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सभी आप इनका सोशल मीडिया पर प्रचार-प्रसार करें और महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें...

अनेक दयानन्दः– इस देश में अनेक दयानन्द उत्पन्न होंगे। वैदिकधर्म की वृद्धि के समय उन मायिक पुरुषों से इस धर्म की रक्षा करना आर्यो के लिए बड़ी सावधानी और बुद्धिमत्ता का काम होगा। **(श्रीमद्यानन्द प्रकाश पृ. 432)**

अन्न का नाशः– थाली में जूठन छोड़ना बहुत बुरा है। इसमें एक तो खाद्य वस्तु का व्यर्थ में नाश होता है और दूसरे यदि किसी को दिया भी जाय तो बिगाड़ कर देना विवर्जित है। जूठा अन्न किसी मनुष्यों को भी नहीं देना चाहिए। **(श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृ. 286)**

दूषित अन्नः– अन्न दो प्रकार से दूषित होता है, एक तो तब जब दूसरे को दुःख देकर प्राप्त किया जाय और दूसरे जब कोई मलिन वस्तु उस पर अथवा उसमें पड़ जाय।

(श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृ. 286)

अप्रसन्न क्यों न हो?:– लोग कहते हैं कि सत्य को प्रकट न करो, कलेक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे चक्रवर्ती राजा भी क्यों न अप्रसन्न हो हम तो सत्य ही कहेंगे। **(न. वा. जा. पु. म 368)**

शोक समाचार

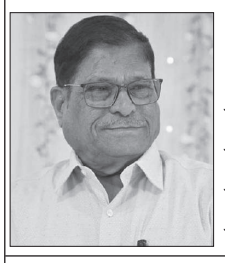

श्री माधवराव देशपांडे जी का निधन

आर्य समाज के अनुभवी अधिकारी, विद्वान, कर्मठ एवं प्रेरक कार्यकर्ता, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री माधवराव देशपांडे जी का 25 जुलाई 2023 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

श्री चन्द्र कुमार आर्य जी का निधन

वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली के महामंत्री श्री राकेश कुमार आर्य जी के पूज्य चाचा जी श्री चन्द्र कुमार आर्य जी का 25 जुलाई 2023 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा 28 जुलाई 2023 को सनातन धर्म मन्दिर मोती नगर में संपन्न हुई। जिसमें सभा एवं विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारियों ने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

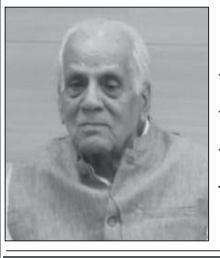

श्री श्रद्धानन्द जी का निधन

आर्य समाज विजय नगर गुप्ता कालोनी के पूर्व प्रधान एवं कोषाध्यक्ष श्री श्रद्धानंद जी का 21 जुलाई 2023 को 95 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। 24 जुलाई को आर्य समाज डेरावाल नगर में उनकी श्रद्धांजलि सभा संपन्न हुई। जिसमें आर्य समाज एवं क्षेत्रीय अधिकारियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त व परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -संपादक

ओ३म्
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्वावधान में
नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता
का आयोजन किया जा रहा है
विषय: अंधविश्वास एवं पाखंड निवारण (नुक्कड़ नाटक)
तिथि: 5 अगस्त 2023, शनिवार
समय: प्रातः 8:30 बजे
स्थान: सुशील राज आर्य पब्लिक स्कूल
ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली
नियम
1. प्रतियोगिता में अधिकतम 12 विद्यार्थी भाग ले सकेंगे।
2. सभी प्रतियोगी सफेद गणवेश में उपस्थित रहेंगे।
3. नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति का समय 10 मिनट रहेगा।
4. प्रतिभागी-दल, ढोलक, बाँसुरी, हार्मोनियम, डफली आदि वाद्य-यन्त्रों का प्रयोग कर सकते हैं।
इस प्रतियोगिता में आर्य विद्या परिषद के अंतर्गत सभी विद्यालय भाग लेंगे।
सुरेंद्र कुमार रैली तृप्ता शर्मा वीना आर्या
अंधविश्वास निवारण समिति

ईश्वर के प्रति आस्था जगाने वाली सुन्दर चित्रकथा
₹30/-
10% विशेष छूट
अपने बच्चों को यह उपहार अवश्य दें
ऑनलाइन खरीदें
vedicprakashan.com
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

निर्वाचन समाचार

अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानंद दलितोद्धार सभा का चुनाव संपन्न

श्री विजय कपूर– प्रधान
श्री संजीव कोहली– उपप्रधान
श्री चन्द्रमोहन कपूर– मंत्री
श्री रवीन्द्र नाथ राणा– कोषाध्यक्ष

11 जून 2023 को 'अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा' का वार्षिक अधिवेशन चुनाव अधिकारी श्री श्रद्धानन्द बग्गा जी की देखरेख में आर्य समाज आर्य नगर, पहाड़गंज में संपन्न हुआ। जिसमें श्री विजय कपूर, प्रधान, श्री संजीव कोहली, उपप्रधान, श्री चन्द्रमोहन कपूर, मंत्री, श्री रवीन्द्र नाथ राणा, कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज आर्य नगर पहाडगंज
नई दिल्ली-110055
प्रधान : श्री विजय कपूर
उपप्रधान : श्री संजीव कोहली
मंत्री : श्री चन्द्रमोहन कपूर
कोषाध्यक्ष : श्री रवीन्द्र नाथ राणा

सोमवार 24 जुलाई, 2023 से रविवार 30 जुलाई, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 26-27-28 जुलाई, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 26 जुलाई, 2023

ओ३म्
आर्य समाज की पहल
सुशील राज
आर्य प्रतिभा विकास संस्थान
द्वारा
संघ लोक सेवा आयोग की
सिविल सेवा परीक्षा IAS / IPS / IRS etc..
की उत्तम तैयारी हेतु
आर्य प्रतिभा छात्रवृत्ति परीक्षा
देश के प्रतिभावान प्रतिभागियों के साथ परीक्षा की तैयारी का अवसर
दिनांक 24 अगस्त 2023 11:00 पूर्वाह्न
निःशुल्क
आज ही रजिस्टर करें
प्रमुख सुविधाएं
मार्गदर्शन
रहना
शिक्षण
खाना
इच्छुक उम्मीदवार ऑनलाइन आवेदन करने के लिए संपर्क करें ।
वेबसाइट : www.pratibhavikas.org
आवेदन की अंतिम तिथि - 10 अगस्त 2023
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172 E-mail: dss.pratibha@gmail.com
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ (रजि०)

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16	मुद्रित मूल्य ₹60	प्रचारार्थ ₹40	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16	₹100	₹60	
पॉकेट संस्करण	₹80	₹50	
विशिष्ट पॉकेट संस्करण	₹150	₹100	
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8	₹150	₹100	
उपहार संस्करण	₹1100	₹750	
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द	₹200	₹130	
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द	₹250	₹170	

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

प्रतिष्ठा में,

JioTV Jio TV+
आर्य समाज का एक मात्र टीवी चैनल
आर्य सन्देश टीवी
Arya Sandesh TV
अब जियो टीवी नेटवर्क पर भी
Jio Set Top Box और JIO मोबाइल App पर उपलब्ध

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE
TOWARDS CREATING A
CLEANER | GREENER | SAFER
TOMORROW.
JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह